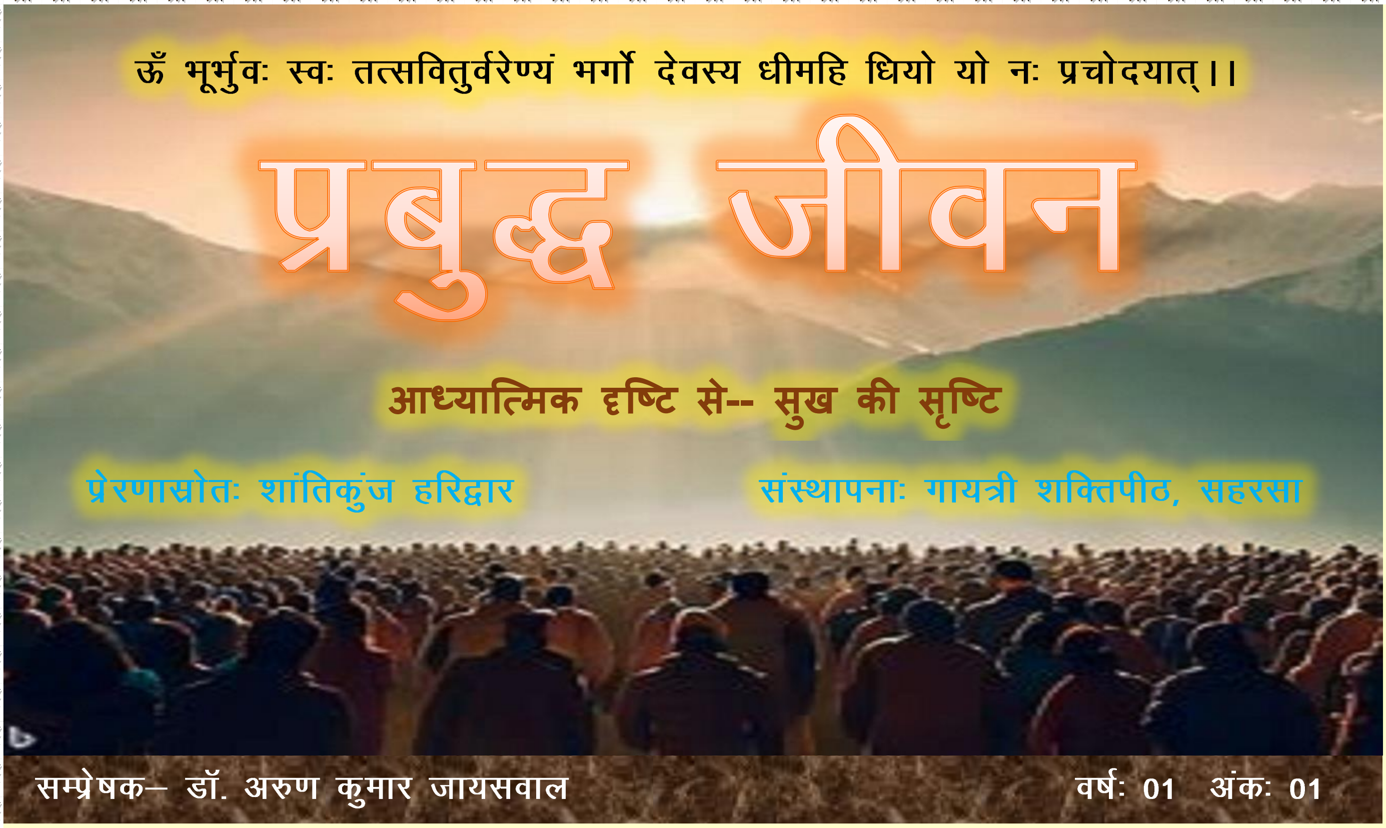

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

प्रबुद्ध जीवन

आध्यात्मिक दृष्टि से-- सुख की सृष्टि

प्रेरणास्रोतः शांतिकुंज हरिद्वार संस्थापनाः गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

सम्प्रेषक– डॉ. अरुण कुमार जायसवाल वर्षः 01 अंकः 01

गायत्री मंत्र

गायत्री मंत्र– ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात' सुनना–स्मरण करना–समझना–स्वीकार करना, स्वयं में समा लेना, स्वयं इसमें समा जाना– सम्पूर्ण जीवन साधना है। जो ऐसा कर पाता है, वह अपने आप ही अध्यात्म के अर्थ को, तत्व और मर्म को जान लेता है। उसकी अन्तर्चेतना में स्वतः अध्यात्म साधना के प्रत्येक विधान और सम्पूर्ण विज्ञान प्रकट हो जाते हैं।

गायत्री साधना किए जाने का एक ही परिणाम है– जीवन चेतना में सूर्योदय। साधक के अन्तर्जीवन और बाह्य जीवन में यदि सम्पूर्ण तमस का विनाश करने वाले भगवान सूर्य उदित हो रहे हैं, तो समझना चाहिए कि साधना सम्यक् और सुचारू है और यदि भगवान सूर्य साधना करने वाले की जीवन चेतना में उदय हो चुके, सम्पूर्ण रूप से प्रकट हो गए तो समझना चाहिए कि गायत्री साधना सम्पूर्ण हुई, सिद्ध हुई, सफल हुई।

गायत्री मंत्र–गायत्री चेतना–गायत्री माता एवं भगवान सूर्य सभी परस्पर एक, एकात्म और एकाकार हैं और जब इनकी साधना करने वाला साधक स्वयं को इनसे एक होकर अनुभव करता है, तो वह कह उठता है– योऽसावसौ सूर्यः सोऽहमस्मि' जो वह सूर्य है, वही मैं हूँ। ऊंकार तीन व्यहृतियां एवं गायत्री मंत्र के नौ शब्द– ये सभी तेरह अपनी सम्पूर्णता में गायत्री महामंत्र के रूप में, सूर्य देव के रूप में चौदह भुवनों को प्रकाशित करते हैं। इस प्रकाश में हम स्वयं है और हमारे स्वयं में यह प्रकाश हैं।

हृदय से हृदय तक

'हृदय से हृदय तक' पहुँचने के प्रयास में **'प्रबुद्ध–जीवन'** का आरम्भ हो रहा है। कहने में, देखने में यह ऑनलाईन प्रकाशित होने वाला लघु समाचार पत्र है परन्तु इसमें प्रकाशित शब्दों में समाहित भाव चेतना अति विशाल और अतिव्यापक है जो हम सबको अपने में समेट लेने में समर्थ है। इसके बारे में अनेकों के मन में अनेक तरह की जिज्ञासाएँ उठ खडी हों– यह स्वाभाविक है। आखिर यह सब क्यों? क्या जरूरत पड़ गयी इसकी? और भी ऐसे अनेक सवाल। हम सब तो मिलते ही रहते हैं, कभी रविवासरीय कक्षा में, कभी रोजमर्रा के क्रम में। आपस में काफी बातें भी हो जाती हैं, फिर यह सब क्यों?

तो इन सभी क्यों? कैसे? और क्या? के उत्तर में यही कहेंगे कि जो कुछ अभी है– उसका संबंध कभी एक से है, कभी दूसरे से है, सब से साथ–साथ, एक साथ नहीं है। हम सबका सम्पर्क–संबंध एक साथ हो सके– इस संभावना को साकार करने के लिए यह **'प्रबुद्ध जीवन'** है। हम सभी को एक साथ सभी गतिविधियों की, क्रियाकलापों की सूचना मिल सके–मिलती रहे, इसी के लिए यह आरम्भ है। इस लघु समाचार पत्र **'प्रबुद्ध जीवन'** के नाम में भी कुछ निहितार्थ है और वह यह कि हम सबके सब साथ–साथ हाथों में हाथ डाले, एक–दूसरे का हाथ थामे, एक दूसरे का हाथ बढ़ाते हुए सद्बुद्धि, सन्मार्ग व सुव्यवस्था को अपनाकर जीवन पथ पर चलते रहें। स्वयं में प्रबुद्ध बनें, औरों को प्रबुद्ध बनायें।

इस नवारम्भ का सुअवसर गुरु–पूर्णिमा हो, इसके पीछे भी एक सुविचार है। गुरु शब्द में दो अक्षर एवं दो मात्रायें हैं। इन चार में जीवन के चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अपने आप समा गए हैं। पूर्णिमा के प्रकाश में गुरु कृपा का प्रसाद है, जिसमें शिष्यों का अधूरापन स्वतः पूर्ण होने का आशीर्वाद है, तो सोचा यह कि क्यों न हम सब मिलकर अपने प्रबुद्ध जीवन के लिए आशीष ले लें। विश्वास है कि इस गुरु–आशीष के अभिसिंचन से प्रबुद्ध जीवन का यह नवांकुर स्वतः ही ऐसे महावट का रूप ले लेगा जिसकी सुन्दर छांव में बैठकर हम सब नवविचारों के पल्लव–किसलय का आनन्द उठाते रहेंगे।

यह आरम्भ लघु है, परन्तु इसे अपने हृदय में उफनती भावनाओं की गहराई में डूब कर के आपके हृदय के लिए लिखा गया है। भरोसा है हृदय के स्वर हृदय तक अवश्य पहुँचेंगे। इसके अक्षर–अक्षर में अर्थ है और पंक्ति–पंक्ति में प्राण। इसके प्रत्येक पृष्ठ में प्यार का प्रकाश है, जो आपको छुए बिना, आपसे कुछ कहे बिना न रहेगा। अब तो प्रति–मास आपसे भेंट–मिलन होता रहेगा। हम सभी गतिविधियों के साथ विचारों के भी साझीदार बनेंगे।

सभी को सम्प्रेषक का स्नेह

KINDNESS

Guru Pandit Shriram Sharma and Gurumata Bhagwati Devi Sharma's teachings and discourses were practically laid out for me much before I was to enter their divine fold.

Strangely, I saw the practical experiments of what Guruji had written down much earlier before I read them later in my life. We don't realize this but our future paths are already carved out for us very early on.

Ordinary people sometimes lead quiet extraordinary lives and leave this world without much noise.

The first time I heard about Guruji was during my first visit to Hardwar. It was from a simple hearted Gayatri parijan in Shantikunj. She had been living there for the last thirty years. This lady did not mention Guruji's great literature or his divine philosophy or his godly personality.

She said to me only one thing. Guruji was the kindest person she ever knew in her life, kinder than her own father. I remember how her face changed when she mentioned an anecdote where she explicitly described how benevolent a figure Guruji was.

A collection of memories then descended from my mind's attic.

How does one truly articulate about one's so-called trajectory as life, which has been majorly shaped up because of a husband -wife couple? A couple that instilled a deep understanding of spirituality through their lives. How does one express that life's greatest moments are when you learn unknowingly something as a child from an adult whose simple actions remain the deepest secrets with the gods above? The lives of great people can never really be worded. The impact that they create, resonate in everything that we do later. Words have never been adequate since the inception of man and the evolution. Perhaps that is why the truth that wishes to be expressed is still wanting of something better.

Then that truth must be only experienced. Sumati Dinanath Sakhadrande and Dinanath Sakhardande are those two human beings classify under the league of those great people who silently walked on this earth, made no news but transformed quite a few lives. I knew them as 'Aai' and 'Baba' much before I knew my biological parents. Just imagine the kind of immense showering of love and affection I must have received from them in my nascent phase. All my happy memories in my former years are resourced from this extraordinary couple.

Aai through her actions taught me that there is no pain greater than a person starving. What people read in books, I witnessed her acts of profound kindness as a child. She would go half hungry and serve anybody who came to her doorstep with food and water. They came from humblest backgrounds but the willingness to give has never had

anything to do with the wallet or any equation with the bank balance. They only shared. Through them, I comprehended that wisdom is only and only about kindness.

Spirituality is about assimilating the core spirit of things both animate and inanimate. Aai taught me how a spiritual person conducts herself or himself. She taught me that there are grander things in life than money, gold and other riches. She practiced and I watched as a child.

Their personalities nourished and prompted new vigor into anyone who came across them. Baba was a core believer and practitioner of the Bhagvad Gita and in his lifetime he exemplified whatever the boundless, profound truth the text embodies. He continued working throughout the last days of his life though he suffered from severe heart disease and later succumbed to it.

Aai went on to prove that humanity is above everything else. She upheld the paramount tenet on why man was created in the face of god. Throughout her life, compassion was the rudimentary aspect on which all her thoughts, feelings and deeds were based. They must be the last of men and women who had more insights into human suffering and therefore never judged any person. They gave unconditional affection and always listened to their instincts rather than cleverness. And their instincts were integrated with clear pragmatic solutions to the problem rather than dwelling on the problem and sulking.

This article is not about Sumati and Dinanath Sakhardande alone. It is an inspiration to know what the world really exists for and the purpose why we are here. They had never heard of Shantikunj, never visited Hardwar in their lifetimes, did not know our Guruji or Mataji but in some corner of the nation, they acted like they had revised the texts of Guruji, had internalized his teachings and then had set foot into this world.

The planet will never know what humanism they practiced, how these two inordinate existed on the face of this earth. But they connect to the divine cosmos. Because ultimately this entire existence is based on connecting the dots and finding the wholesomeness in our lives.

The white horse of this Ashwamedha Yagna is all about letting the self, evaporate and letting it integrate with the Universe. It is an individual battle with the senses, with our own madness, selfishness, ego and other vices. Let this epic event of Ashwamedha Yagna inspire us to be more real, simple and unassuming. Let us go back to man’s roots and begin the transformation from within. From our own selves.

And like the Sakhardande couple understand the wisdom that in order to live, we must make better spaces for others to live. Through kindness.

\- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

प्रबुद्ध जीवन

जीवन हम किसलिए जीते हैं? क्या कारण है जो हमें मानव जीवन मिला है? क्या संसार में आकर सिर्फ भ्रमण करके चले जाने के लिए यह मानव जीवन मिला है? क्या सिर्फ सांसारिक सुखों की प्राप्ति हेतु एड़ी–चोटी एक करने के लिए यह मानव जीवन मिला है या कुछ और भी करने के लिए? क्या सिर्फ सांसारिक रिश्ते–नाते ही हमारे रिश्ते–नाते हैं या इससे बड़ा भी किसी से रिश्ता है हमारा? आदि–आदि बहुत सारे प्रश्न हैं और इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि नहीं, केवल इसके लिए यह महान मानव जीवन नहीं है। तो फिर प्रश्न उठता है कि यह जीवन है तो किसलिए? यह जीवन है प्रबोध के लिए, यह जीवन है जन्म–जन्मान्तर के रहट चक्र से मुक्ति प्राप्त करने के लिए। यह जीवन है भक्त बनकर भगवान से एकाकार होने के लिए। यह जीवन मिला है आत्मजागृति के लिए। यह जीवन मिला है जीवन और जगत् की समझ को विकसित करने के लिए। हम प्रबुद्ध हों, बुद्ध हों, शुद्ध हों, मुक्त हों। हम अपनी प्रकृति को गहराई से समझें। हम जीवात्मा और परमात्मा के सम्बन्धों को समझें। हम अणु में विभु और विभु में अणु को समझें। हम अपनी अन्तरात्मा में उतरें। हम अपने प्रबोध की दिशा में अग्रसर हों, इसके लिए 'प्रबुद्ध जीवन' है। वास्तव में,

अबोध से बोध की, यात्रा है प्रबुद्ध जीवन
अन्धकार से प्रकाश की, चाहत है प्रबुद्ध जीवन।
हृदय से हृदय तक पहुँचने का, साधन है प्रबुद्ध जीवन
भक्त बनकर भगवान तक, जाने का रास्ता है प्रबुद्ध जीवन।।

सच, इस जीवन की सर्पीली चाल की समझ हमें नहीं है। रास्ते के कंकड़–पत्थर कब चुभ जाएँ हमें खबर नहीं है, कब हम इस भवसागर के गहरे भँवर में डूब जाएँ, पता नहीं है। हमें यह बोध होना चाहिए कि इस विस्तीर्ण संसार सागर का कोई ओर–छोर नहीं है पर हमें इस विश्वास पर भी अडिग रहना होगा कि इस विस्तीर्ण संसार सागर को बनाने वाले परमात्मा का भी कोई ओर–छोर नहीं है जो हमारे प्रबोध के मार्ग में आए हर काँटे को साफ कर देंगे। परमात्मा के स्वरूप में जब हम एक मातृच्छाया और एक

पितृच्छाया स्वरूप सद्गुरु को महसूस करने लगें, जब उस परमात्मा की भक्ति में हम आकंठ डूब जाएँ, जब कृष्ण ही इस अंधे की लाठी बन जाएँ तो हम अगर सूरदास भी हैं तो पार उतर ही जाएँगे। यह विश्वास अन्तर्मन में जगा लेना ही जीवन प्रबोध है। जिस प्रबोध तक ले जाने की शक्ति हैं माँ गायत्री, जिनके मन्त्र की विलक्षण शक्ति से हम सभी अबोध से बोध की यात्रा करने में सक्षम हो सकते हैं क्योंकि वे सद्बुद्धि की देवी हैं। यह सही है कि हमारा जीवन प्रबुद्ध तभी हो सकता है जब हममें विवेक और वैराग्य होगा जो हमारे चंचल मन को यह औपनिषदिक शिक्षण दे पाएगा कि–

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु

बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रगहमेव तु।।

अर्थात् आत्मा को रथी जानो, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथी जानो और मन को लगाम। फिर इस छोटे से प्रयोग से, इसके निरन्तर अभ्यास से हम अबोध से बोध की यात्रा कर पाएँगे और प्रबुद्ध जीवन के आनन्द का रसास्वादन कर पाएँगे। तो संसार से अध्यात्म की ओर, आसक्ति से अनासक्ति की ओर, भोग से योग की ओर, प्रेय से श्रेय की ओर ले जाने के लिए उस अद्भुत कलाकार की एक अनूठी कला है यह 'प्रबुद्ध जीवन' जिसे हर किसी को सीखना है और सीखकर अपने जीवन को प्रबुद्ध करना है। कारण जो प्रबुद्ध है, वही शुद्ध है। जो प्रबुद्ध है वही जीवन्मुक्त है। तो आईए हम पढ़ें प्रबुद्ध जीवन और प्रबोध की दिशा में एक कदम बढाएँ।

– डॉ. लीना सिन्हा

जिज्ञासा

प्रश्न :– जीवन क्या है?

उत्तर :– जीवन आत्म चेतना की अभिव्यक्ति है। शरीर और आत्मा का मिलन है जीवन। आत्मा खुद को जीवन के रूप में अभिव्यक्त करती है। जीवन का उद्देश्य अपनी आत्मा के सत्य को पहचाना है।

प्रश्न :– शरीर रथ है और आत्मा रथी है तो मन क्या है?

उत्तर :– मन है सारथी। आत्मा के कुल में पांच कर्मेंद्रियां, पांच ज्ञानेंद्रियां, प्राण और मन आते हैं। यह सब आत्मा के कुल के सदस्य है।

प्रश्न :– प्रकृति का संविधान क्या है?

उत्तर :– प्रकृति का संविधान है कर्मफल विधान।

प्रश्न :– बोधिसत्त्व क्या है?

उत्तर :– बोधिसत्त्व बुद्धत्व के पहले की अवस्था है। बोधिसत्त्व वह है कि आप गंगा किनारे पहुंच गए, अब उस में डुबकी लगाना बाकी रह गया है। उस अवस्था में आदमी पूर्ण रूप से तैयार हो जाता है, जन्म जन्मांतर के कर्म नहीं रहते, ज्ञान हो चुका रहता है, भटकने की कोई उम्मीद नहीं रहती, एक तरह से बोधिसत्त्व जीवन मुक्त अवस्था है। अब बचा है नित्य मुक्त होना प्रकाश की हल्की सी कमी बची है, अनंत चेतना में हमारी चेतना मिलने वाली है बोधिसत्त्व वह अवस्था है।

प्रश्न :– बुद्धत्व क्या है?

उत्तर :– सम्यक संबोधि को बुद्धत्व की अवस्था कहते हैं। अब आप का पतन संभव नहीं है, आत्मज्ञान में पूर्ण प्रतिष्ठा हो गई है। बुद्धत्व का मतलब है कि ब्रह्मविद्या में पूर्ण प्रतिष्ठा हो जाना। बोध में पूर्ण रुप से प्रतिष्ठा हो जाना। जीवन के सत्य को, जीवन के तत्व को आपने हर रूप में जान लिया, पा लिया, प्राप्त कर लिया– वह है बुद्धत्व की अवस्था।

सुधा बिन्दु

- मनुष्य में एक मैं नहीं है, कई मैं होते हैं। एक मैं सुबह बोलेगा– मैं ये करूँगा, दोपहर में कुछ और करेगा, शाम में कुछ और करने लगेगा। कई मैं हैं हमारे अंदर। दरअसल जिस मैं ने कहा कि आज मैं व्रत करुँगा, दोपहर में दूसरा मैं बोलेगा, नहीं–नहीं आज मैं खाना खाऊँगा और खा लेता है। इस दूसरे मैं का आपके ऊपर वर्चस्व हो जाता है। शाम में तीसरा मैं बोलता है– अरे! गड़बड़ हो गई, व्रत नहीं कर पाये। गलती हो गई। अब ऐसा नहीं करेंगे। तीसरा मैं शाम में गलती स्वीकारता है। तो जब ऐसे कई मैं होते हैं हमारे अंदर तो उनके व्रत, उनके संकल्प, उनके वचन का कोई मोल नहीं होता। आज के इंसान की यही स्थिति है। लेकिन जब समझ और साधनात्मक पुरुषार्थ से अंदर सिर्फ एक मैं यानि सारे मैं को समेटकर एक हो जाता है, फिर उसका संकल्प पूर्ण होकर रहता है। बहु मैं' **(multi I's)** को 'एक मैं' **(unitary I)** में बदलना ही व्यक्तित्व विकास का पहला चरण है। जिसका मैं एक हो गया उस व्यक्ति के संकल्प का मोल हो जाता है। पोलिसाइकिक मतलब बहुचित्तवान– इसका प्रयोग सबसे पहले महावीर जी ने किया था जो जैन धर्म के गुरू हैं।

- श्रद्धा से संतुष्टि आती है। संतुष्टि आयेगी तो मुस्कुराहट आयेगी। मुस्कुराहट आत्मा के आनंद का रास्ता खोल देती है।

- भगवान क्या देते हैं? श्रद्धा और विश्वास। खुद पर विश्वास करना सिखा देते हैं। फिर वह व्यक्ति कुछ भी कर सकता है।

- जीवन में नकारात्मकता और सकारात्मकता दोनों होती ह। प्रायः सफलता मिलने पर व्यक्ति सकारात्मक और असफल होने पर नकारात्मक हो जाता है लेकिन वास्तव में व्यक्ति का प्रारब्ध ही व्यक्ति के लिए अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है। लेकिन यह भी सत्य है कि धर्माचरण, तप और ईश्वरभक्ति से दैवी सहायता मिलती है और बुरा प्रारब्ध भी क्षीण होता है। वस्तुतः कर्म ही भाग्य का निर्माण करता है।

- मनुष्य की मनःस्थिति और उसके कर्म ही उसकी परिस्थिति का निर्माण करते हैं। हमने छोटे–छोटे लाभ के लिए दूरगामी परिणाम बड़े घातक कर दिये। प्राकृतिक जीवन शैली अपनानी होगी तभी हम बच पायेंगे, मानवता बच पायेगी, पीढ़ी बच पायेगी। हमें हमेशा सोचना पड़ेगा कि हम ब्रह्मांड के, प्रकृति के, अस्तित्त्व के, जीवन की संरचना के अभिन्न अंग हैं। हम इसे मैला करेंगे तो ये मैला हो जायेगा और साफ करेंगे तो साफ हो जायेगा।

- ज्ञान में 7 भूमिका होती है, जिसे सप्त भूमिका कहते हैं। इसकी चर्चा योग वशिष्ठ में है। योग में चित्त शुद्धि के क्रम में सात चक्र की चर्चा है और तंत्र में नौ चक्र की चर्चा है। योग वशिष्ठ में योग और वेदांत दोनों का समावेश है।

- आत्मा के साथ उसका कर्म चिपका रहता है। कर्म जहां–जहां जुड़ता है आत्मा वहीं जाती है। कर्म के आधार पर स्थान तय होता है। कर्म के आधार पर मुक्ति नहीं मिलती, मुक्ति मिलती है ज्ञान के आधार पर ।

- कर्म और भाव इन दोनों के सहयोग से पुनर्जन्म होता है। मुख्य बात है कर्म की गति, कर्म का रहस्य समझना। जीवात्मा का कर्म जिस तरह का होता है, उसी स्तर का गर्भ मिलता है।

- भाव और इच्छा मिलकर ही संकल्प बनता है। भाव के सूत्र को कहते हैं संस्कार और कर्म के सूत्र को कहते कर्मराशि। अपने भाव के सूत्र को भगवान से जोड़ने से वह शुद्ध हो जाएगा और कर्म राशि भी शुद्ध हो जाएगी क्योंकि परमात्मा अनंत ऊर्जा का भंडार है।

- रोगों का इलाज करने वाला जो आयुर्वेद शास्त्र का ज्ञाता होता है, उसे कहते हैं चिकित्सक और जो योग का ज्ञाता होता है, उसे कहते हैं सद्गुरु। तो सद्गुरु जो है, वो चिकित्सक है आपका।

- योग का मतलब होता है– जो प्राप्त नहीं है, उसे प्राप्त करना और क्षेम का मतलब है– उस प्राप्ति की रक्षा करना। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है– 'योगक्षेमम् वहाम्यहम्' अर्थात् जो भक्त समर्पित हो जाता है, उसके योगक्षेम की रक्षा मैं करता हूँ। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो भगवत् स्वरूप की प्राप्ति का नाम योग है और भगवत् प्राप्ति के निमित्त किये हुए साधन की रक्षा करना क्षेम है।

- योग सर्वप्रथम कहाँ से निःसृत हुआ? भगवान शिव से। उन्होंने सप्तऋषियों में भरद्वाज को दिया और महर्षि पतंजलि ने उसको एक व्यवस्थित स्वरूप दिया।

- सारा कचरा तो हमारे मन में ही रहता है, चित्त में रहता है। अगर उसमें पवित्रता आ जाए, ईश्वर तो पवित्रता का सम्पूर्ण स्वरूप है। उसको यदि धारण कर लें, धारणा से अपने चित्त को भी पवित्र बना लें तो उसके व्यक्तित्व का निर्माण हो जायेगा, सम्पूर्णता को प्राप्त कर लेगा इंसान। इसलिए धारणा की, ध्यान की सही उम्र बचपन है, बुढ़ापा नहीं।

- सामान्य सांसारिक रोग हो तो आयुर्वेद शास्त्र में इसका इलाज है। आयुर्वेद इलाज करता है तन और मन का। योग इलाज करता है मन और मन के ऊपर के तत्त्वों का।

- नारी शक्ति के बिना पूरी मानवता विकसित नहीं हो सकती। मानव का जो गुण है, जो सद्गुण है, जो सद्विचार है, सत्कर्म है, सद्भाव है वो पूरी तरह विकसित नहीं हो पायेगा। अगर घर की नारी (माँ–बहन–बेटी–पत्नी) उत्साहित है, पॉजेटिविटी से भरी है, चेहरे पर मुस्कुराहट है तो वह सुबह है। अगर वो उदास हो गई तो फिर शाम है।

- सभी को इस बात पर जरूर विचारना चाहिए कि माँ से हमने कौन सी जरूरी बात सीखी। दुनिया में जितनी भी अच्छाईयों को हम देखते हैं या उसको संजोते हैं तो लगता है हमने ये माँ से सीखा है। अगर आपके पास माँ है, जीवित है तो तहेदिल से शुक्रिया कीजिए। माँ आज मैं जो भी हूँ, आपके कारण हूँ, ये कहिये।

- माँ! की कही हुई बातें बहुत अनमोल होती हैं। माँ की बतायो हर बात में एक सीख होती है। माँ ने दर्द को सहन करना सिखाया। माँ ने हमें बतलाया कि हमेशा कैसे विनम्र रहना चाहिए। दुनिया में कोई व्यक्ति माँ की जगह नहीं ले सकता। जवानी ढल जाती है, प्रेम खत्म हो जाता है, दोस्तियाँ खत्म हो जाती हैं लेकिन एक माँ की उम्मीदें हमशा कायम रहती है। माँ की सोच लोजिए, आपके जीवन में सकारात्मकता आती चली जाती है।

- माँ रोज याद आती है छोटी–छोटी बातों में, हर खुशी में, हर गम में, तकलीफ में याद आती है। उनकी वजह से ही हमने सहनशीलता को सीखा है। उन्हीं से जानी है उदारता। सहनशीलता और उदारता ही जीवन के मूल तत्त्व हैं।

- माँ ब्रह्मा है, पिता विष्णु है, शिव हैं गुरु वे, जो माँ को भी डांट सकते हैं, पिता को भी डांट सकते हैं।

- परिवार का मतलब वो जुड़ाव जिससे आप जीवन भर प्यार करते हैं, जिससे हर परिस्थिति में आप सहारा पाते हैं। सचमुच में परिवार कहिए तो ईश्वर का दिया हुआ हम सबको पहला उपहार है।

- आपकी सफलता इस आधार पर देखी जाएगी कि आपका परिवार और आपके बच्चे कितने काबिल हैं। इस आधार पर नहीं कि कितना कमाया।

- आपलोग कितना मिल–जुलकर एक–दूसरे का सम्मान करते हैं, कितना एक–दूसरे के सुख–दःख में साथ देते हैं, एक–दूसरे के साथ मिल–जुलकर कितना हँसते हैं? ये महत्त्वपूर्ण है?

- परिवार से मिलने वाली भावनात्मक मदद जो है न, वो ऊर्जा बुरे वक्त को आसानी से पार करने में मदद करती है, बहुत सक्षम बनाती है।

- दुर्गुण छोटा हो या बड़ा हो, परिणाम बड़े गंभीर होते हैं।

- हमारी जीवन व्यवस्था ऐसी है कि हम लम्बे समय तक जी सकते हैं। हमने प्रकृति को माता कहा है, आदिशक्ति कहा है, जगत्जननी कहा है। प्रकृति के विविध घटकों को देवी–देवता माना है। हमारी हवा, केवल हवा नहीं बल्कि वायुदेव हैं। हमारा जल, केवल जल नहीं है अपितु वरुण देवता हैं। हमने पर्वतों को, समुद्रों को, नदियों को जीवन का हिस्सा माना है। उनका पूजन किया, संरक्षण किया है।

- हमने भावनाओं से जीवन को जोड़ा है और जीवन से भी हमारी भावनाएँ जुड़ी हुई हैं। ये मूखता नहीं है बल्कि ये दीर्घ जीवन जीने का तरीका है, ये व्यवहार है।

- जिस घर में प्रेम होता है, वहाँ मनोरोग नहीं होते हैं।

- जबरदस्ती बच्चों के ऊपर अपना फ्रस्ट्रेशन मत थोपिए कि हम आई.ए.एस. नहीं बने तो बच्चा आई.ए.एस. बने। हम डॉक्टर नहीं बनें तो बच्चा डॉक्टर बने। उसके नैसर्गिक प्रतिभा को देखिए, उसकी अभिरुचि को देखिए कि वह किधर जाना चाहता है।

- अच्छाई और बुराई की सबसे बड़ी जंग हमारे मन में ही लड़ी जाती है और रोज लड़ी जाती है। इस मन को कैसे सही करें? इसी के लिए प्रार्थना है, जप है, ध्यान है, पूजा–पाठ है। अच्छी–अच्छी बातां का संग है यानि सत्संग है।

- परम्पराएँ परिवार को जोड़ती हैं।

- हम अपने परिवार से हाथ न धो बैठें, इस विकास को अंधी दौड़ में, इसलिए सचेत होने की जरूरत है।

- आज बच्चे में नशा करने का सूक्ष्म कारण यदि देखा जाए तो परिवार की अस्त–व्यस्तता है। परिवार का वातावरण नकारात्मक है।

- आजकल जितने रिश्ते–नाते हैं, उसका महत्त्व हम समझते नहीं हैं। उस महत्त्व को, उसकी जरूरत को जानने, समझने और उसको जीवन में उतारने के लिए सारे दिवस मनाये जाते हैं।

- जिन्दगी जीने के लिए जिस व्यवहारिक समझदारी की जरूरत होती है, वह पिता से ही मिलती है।

- पिताजी आपने हमें वो ज्ञान, वो संस्कार दिया है, संघर्ष करने की क्षमता दी है, प्रतिकूल परिस्थिति में जूझने की जो क्षमता दी है, उसके लिए हम आपको नमन करते हैं। हमें और ऊर्जा दीजिए, ताकत दीजिए ताकि हम जीवन में आगे बढ़ सकें। हम अपने सपनों को और आपके सपनां को भी साकार कर सकें।

जून माह की विशेष गतिविधियाँ

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में संपन्न होने वाले दैनिक गायत्री यज्ञ में समिल्लित श्रद्धालु

प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर, गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में रुद्राभिषेक करते परिजन

सदर अस्पताल में गायत्री शक्तिपीठ,सहरसा में सभी वर्गो के लिए प्रति दिन दोपहर 1 से 2 के बीच भोजन प्रसाद वितरण...

दिनांक 11 जून 2023 सहरसा के पतरघट प्रखंड के गोलमा गांव में गायत्री परिवार द्वारा एक दिवसीय पांच कुंडीय गायत्री यज्ञ कराया गया। साथ ही कार्यक्रम का समापन संध्याकालीन दीपयज्ञ के साथ हुआ।

समर कैम्प :

13 जून से बाल संस्कार शाला सहरसा के बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु 10 दिवसीय समर कैंप आयोजित किया गया।

व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान और ध्यान) – डॉ अरुण कुमार जायसवाल

21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सामूहिक योग का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बाल संस्कार शाला के बच्चों, गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के छात्रों एवं गायत्री परिवार के सदस्यों ने भाग लिया।

बाल संस्कार शाला के बच्चे योग करते हुए

24 घरों में यज्ञ कराने वाले परिजन का सामूहिक चित्र

गायत्री शक्तिपीठ की देवकन्याओं द्वारा के महिने के अंतिम रविवार को सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में 24 नए घरों में होने वाले यज्ञ की एक झलकियाँ

यज्ञ के बाद विधिवत मंत्र के उच्चारण के साथ पौधा रोपण एवम पर्यावरण संरक्षण हेतु संकल्प

पिछले दस वर्षों से प्रत्येक महीना के अंतिम रविवार की तरह, दिनांक 25.06.2023 को सिमरी बख्तियारपुर स्थित गोशपुर गांव के 24 नये घरों में यज्ञ, वृक्षारोपण और दीवार लेखन एवं पुराने अखण्ड ज्योति पत्रिका के वितरण का कार्य संपन्न किया गया, गायत्री परिवार, सहरसा के द्वारा।

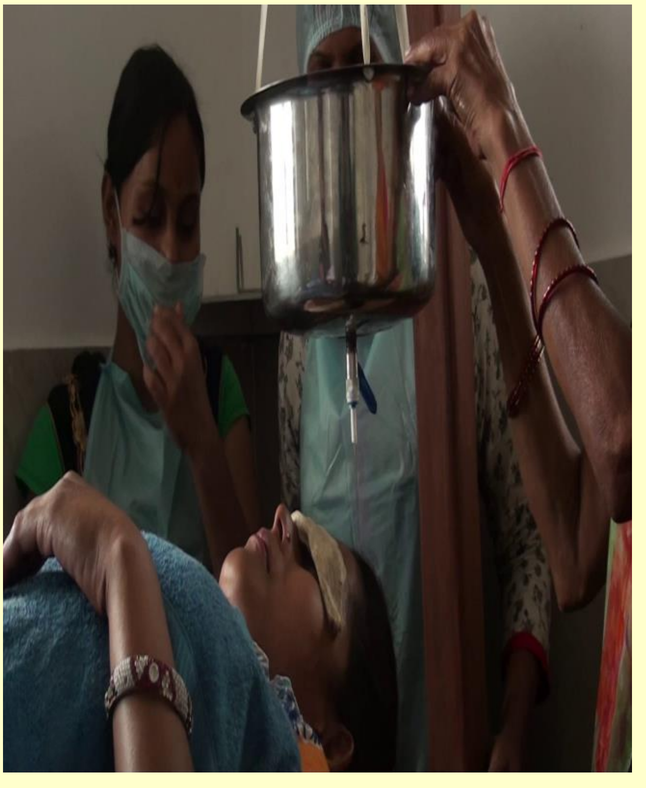

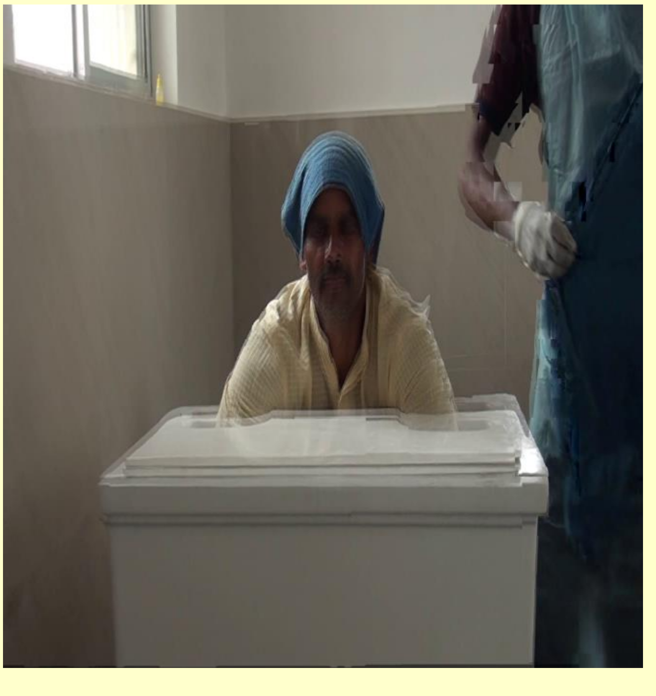

स्वास्थ्य समृद्धि केंद्र, गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में पंच तत्वों के माध्यम से प्राकृतिक उपचार

गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान सहरसा में कंप्यूटर सीखते हुए छात्र एवं छात्राएँ।

पिछले 8 वर्षों से अनवरत कंप्यूटर शिक्षण का क्रम गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की ओर से चलाया जा रहा है, जिसमें दो प्रकार के सत्र चलाए जाते हैंः– 1. त्रैमासिक सत्र (CCA) 2. छःमासिक सत्र (DCA)। DCA कोर्स के अंतर्गत प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार पाने वाले तीनों बच्चों को शक्तिपीठ सहरसा की ओर से निःशुल्क लैपटॉप वितरण किया जाता है। अभी तक में लगभग 2,000 के करीब छात्र–छात्राएँ यहाँ से कंप्यूटर की शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं एवं 48 मेधावी छात्र एवं छात्राओं को शक्तिपीठ सहरसा की ओर से लैपटॉप वितरित किया जा चुका है।

सभी लैपटॉप सहरसा निवासी वर्तमान में मलेशिया में कार्यरत श्री प्रशांत जायसवाल जी के द्वारा लगातार दिया जा रहा है।

माह जून में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान , ज्ञान, ध्यान) में भाग लियाः—

- राहुल झा, मुम्बई (GM- jio)
- नीलू रंजन, दिल्ली (पत्रकार दैनिक जागरण)
- मोनिका रंजन, पुणे (AGM आईडीबी आई बैंक)
- प्रो. सच्चिदानंद, दरभंगा (सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य नालंदा कॉलेज)
- पंकज यादव, पटना (प्राचार्य)
- सीमा बाला, पटना (शिक्षिका)
- प्रेमा चौधरी (पूर्व विधायक, हाजीपुर)
- संध्या, पटना (इंटीरियर डिजाइनर)
- शंकर शरण, अररिया (सिविल SDO)
- अमित कुमार, पटना(हाई कोर्ट वकील)

आगामी कार्यक्रम

विशेष प्रसादः 02 जुलाई, 2023,
गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

गुरु पूर्णिमाः पर्व पूजन, अखण्ड जप, दीप यज्ञ, प्रसाद वितरण
03 जुलाई, 2023, गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

श्रावण मास का अभिषेक 04 जुलाई से प्रतिदिन
स्थानः सहरसा गायत्री शक्तिपीठ

भाव पथ...

प्रबुद्ध जीवन की बात हुई है
हृदय से हृदय तक स्पन्दन हुआ है ।

अध्यात्म की सुरमयी वीणा के
सप्तक तारों को छेड़ा गया है ।
दिग्दिगन्त हो सके गुँजित
कुछ ऐसा नवल प्रयास हुआ है ।। प्रबुद्ध जीवन -----

ईर्ष्या-विद्वेष की आँधी को
उड़ाने के लिए सद्विवेक की, प्रत्यंचा कसी गई ।
मानव मन में छुपे असुरों को
मारने के लिए देवमाता तत्पर हुई है ।। प्रबुद्ध जीवन -----

बिना शुद्ध हुए, बिना बुद्ध हुए
आकर - जाकर क्या मिलेगा ?
मनुज को बुद्धत्व का पाठ पढाने
तभी तो विचार क्रांति की भोर हुई है ।। प्रबुद्ध जीवन ----

विषभरा यह मानव मन
अज्ञान विष से मूर्च्छित रहता ।
तभी गुरुवर श्रीराम की अमृत वाणी से
जीवन प्रबोध की बात हुई है ।। प्रबुद्ध जीवन ----

....

डॉ लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है– मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे– यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार : गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)

संपर्क सूत्र : 06478.228787, 9470454241

Email : gspsaharsa@gmail.com

वेबसाइट : https://gsps.co.in/

Social Connect
https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA
https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6
https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/